❍ 05 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बाप से अन्दर बहार साफ़ रहे ?*

➢➢ *परचिन्तन तो नहीं किया ?*

➢➢ *फ़ाकदिल बन दुखी अशांत आत्माओं को ख़ुशी का दान दिया ?*

➢➢ *ज्ञान योग की पालना से स्वयं को शक्तिशाली बनाया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *विशेष अमृतवेले पावरफुल स्थिति की सेटिंग करो।* पॉवरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। जैसा श्रेष्ठ समय है, वैसी श्रेष्ठ स्थिति होनी चाहिए। *साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो, लेकिन यह विशेष वरदान का समय है। इस समय को यथार्थ रीति यूज करो तो सारे दिन की याद की स्थिति पर उसका प्रभाव रहेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

✺ *"मैं प्रवृत्ति में रहते न्यारी और परमात्मा की प्यारी आत्मा हूँ"*

~✧ अपने को प्रवृत्ति में रहते न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो? कि प्रवृत्ति में रहने से प्रवृत्ति के प्यारे हो जाते हो, न्यारे नहीं हो सकते हो? *जो न्यारा रहता है वही हर कर्म में प्रभु प्यार अर्थात् बाप के प्यार का अनुभव करता है। अगर न्यारे नहीं रहते तो परमात्म प्यार का अनुभव भी नहीं करते और परमात्म प्यार ही ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है।* वैसे भी कहा जाता है कि प्यार है तो जीवन है, प्यार नहीं तो जीवन नहीं। तो ब्राह्मण जीवन का आधार है ही परमात्म प्यार और वह तब मिलेगा जब न्यारे रहेंगे। लगाव है तो परमात्म प्यार नहीं। न्यारा है तो प्यार मिलेगा। इसीलिये गायन है जितना न्यारा उतना प्यारा।

~✧ वैसे स्थूल रूप में लौकिक जीवन में अगर कोई न्यारा हो जाये तो कहेंगे कि ये प्यार का पात्र नहीं है। *लेकिन यहाँ जितना न्यारा उतना प्यारा। जरा भी लगाव नहीं, लेकिन सेवाधारी। अगर प्रवृत्ति में रहते हो तो सेवा के लिये रहते हो। कभी भी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्म बन्धन है .. लेकिन सेवा है। सेवा के बन्धन में बंधने से कर्म-बन्धन खत्म हो जाता है।* जब तक सेवा भाव नहीं होता तो कर्मबन्धन खींचता रहता है। बाप ने डायरेक्शन दिया है उसी श्रीमत पर रहे हुए हो, अपने हिसाब किताब से नहीं। कर्मबन्धन है या सेवा का बन्धन है .. उसकी निशानी है अगर कर्म बन्धन होगा तो दु:ख की लहर आयेगी और सेवा का बन्धन होगा तो दु:ख की लहर नहीं आयेगी, खुशी होगी।

〰✧ तो कभी भी किसी भी समय अगर दु:ख की लहर आती है तो समझो कर्मबन्धन है। कर्मबन्धन को बदलकर सेवा का बन्धन नहीं बनाया है। परिवर्तन करना नहीं आया है। विश्व सेवाधारी हैं, तो विश्व में जहाँ भी हो तो विश्व सेवा अर्थ हो। यह पक्का याद रहता है या कभी कर्मबन्धन में फंस भी जाते हो? सेवाधारी कभी फंसेगा नहीं। वो न्यारा और प्यारा रहेगा। समझते तो हो कि न्यारे रहना है लेकिन जब कोई परिस्थिति आती है तो उस समय न्यारे रहो। कोई परिस्थिति नहीं है, उस समय तो लौकिक में भी न्यारे रहते हो। *लेकिन अलौकिक जीवन में सदा ही न्यारे। कभी-कभी न्यारे नहीं, सदा ही न्यारे। कभी-कभी वाले तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे। सदा राज्य करना है तो सदा न्यारा भी रहना है ना। इसलिए सदा शब्द को अन्डरलाइन करो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ हे शान्ति देवा श्रेष्ठ आत्मायें। इस शान्ति की शक्ति को अनुभव में लाओ। जैसे वाणी की प्रैक्टिस करते-करते वाणी के शक्तिशाली हो गये हो, ऐसे *शान्ति की शक्ति के भी अभ्यासी बनते जाओ।* आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा।

〰✧ ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे। क्योंकि जितना जो *महान शक्तिशाली शस्त्र होता है वह कम समय में कार्य ज्यादा करता है।* और जितना जो महान शक्तिशाली होता है वह अति सूक्ष्म होता है। तो *वाणी से शुद्धसंकल्प सूक्ष्म हैं,* इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा।

〰✧ अभी भी अनुभवी हो, जहाँ वाणी द्वारा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है तो कहते हो - यह वाणी से नहीं समझेंगे, *शुभ भावना से परिवर्तन होंगे।* जहाँ वाणी कार्य को सफल नहीं कर सकती, वहाँ *साइलेन्स की शक्ति का साधन शुभ-संकल्प, शुभ-भावना, नयनों की भाषा द्वारा रहम और स्नेह की अनुभूति कार्य सिद्ध कर सकती है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ बॉडी-कान्शियस होगा तो अभिमान आयेगा, *आत्म-अभिमानी होंगे तो अभिमान नहीं आयेगा लेकिन रूहानी फखुर होगा और जहाँ रूहानी फखुर होता है वहाँ विघ्न नहीं हो सकता।* या तो है फिक्र या है फखुर। दोनों साथ नही होते।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- अविनाशी ज्ञान रत्नों को दान करने की रेस करना"*

➳ _ ➳ खुबसूरत प्रकृति के सानिध्य में बैठी हुई मै आत्मा... मीठे बाबा की यादो में डूबी हुई... अपने महान भाग्य को याद कर रही हूँ... कि अचानक चलते चलते भगवान ही मेरे जीवन में उतर आया... और यह साधारण गरीब और दुखी जीवन... *यकायक ईश्वरीय अमीरी से खनकने लगा... और मेरी अमीरी की गूंज पूरे विश्व में गुंजायमान हो गयी..*. ऐसे मीठे भाग्य को तो कल्पनाओ में भी कभी न देखा... और आज ऐसे मीठे, ज्ञान धन की दौलत से खनकते... जीवन की मालिक बनकर मुस्करा रही हूँ... *ऐसे प्यारे भाग्य को सजाकर... मेरे हाथो में सौंपने वाले मीठे बाबा को... प्यार करने* वतन में उड़ चलती हूँ...

❇ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अपने सारे खजानो को मुझे सौंपते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... ईश्वर पिता की बाँहों में समाकर... जो ज्ञान धन की दौलत से भरपूर हो गए हो... तो *यह खजाने, यह अमीरी, हर दिल पर बिखेर कर... सबका दामन सच्ची खुशियो से सजाने वाले... खुशियो के सौदागर बनकर मुस्कराओ... अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करने की रेस की बदौलत... असीम आनन्द और सुख को अपने दिल में सजा हुआ सहज ही पाओ...*

➳ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में दीवानी हैकर कहती हूँ:-* "मीठे

मीठे बाबा... आपने मुझ आत्मा को अपने प्यार की बाँहों में भरकर, विश्व की बादशाही से सजा दिया है... कब सोचा था कि मेरी गरीबी यूँ ईश्वरीय अमीरी में बदल जायेगी... और मै आत्मा *यह धन बाँटने वाली... महा धनवान् बन इस धरा पर इठलाउंगी.*.."

❊ *प्यारे बाबा ने मुझे अपने प्यार और पालना में पत्थर से पारस सा चमकाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वर धन की बरसात करने वाले, सबको सुखो की मुस्कान सजाने वाले,... इस धरा पर खुशियो की बहार लाने वाले... *मा भगवान बन, सबको अविनाशी रत्नों रुपी धन बांटते चलो... और इस रेस में एक से बढ़कर एक... ऐसा कमाल दिखाओ..*."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य शिक्षाओ को जीवन में उतारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा.... मै आत्मा अपने समान सुंदर तकदीर हर आत्मा की बना रही हूँ... *ईश्वरीय ज्ञान रत्नों की दौलत देकर... सबकी दुखो भरी गरीबी, सदा की खत्म करवा रही हूँ..*. अपने बिछड़े पिता से हर आत्मा को मिलवाकर... पुण्यो का खाता बढ़ाती जा रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा ने मुझे ज्ञान धन से आबाद कर ज्ञान परी बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... हर दिल को ईश्वरीय धन से सम्पन्न बनाकर... सारे जहान को सच्चे आनंद से भरने वाले... सच्चे रहनुमा बन मुस्कराओ... सबके जीवन में सुख के फूल खिलाओ... *ईश्वरीय ज्ञान की झनकार सुना कर... सुख, शांति, प्रेम की तरंगे पूरे विश्व में फैलाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वरीय प्यार में गहरे डूबकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा... आपसे पायी खुशियां सबके दिन आँगन में सजाकर मै आत्मा... कितने महान भाग्य से सजती जा रही हूँ... *सच्चे ज्ञान की खशबू और गुणो की धारणा से हर दिल को अपने पिता से मिलवाने का महान सौभाग्य प्राप्त कर रही हूँ.*.."मीठे बाबा से प्यार भरी रुहरिहानं कर मै आत्मा... अपने स्थूल तन में लौट आयी...

———————————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप से अन्दर बाहर साफ रहना है*"

➳ _ ➳ भगवान बाप के साथ साकार मिलन की यादों की स्मृति मुझे बार - बार मधुबन घर की याद दिला रही है। मेरा मन रूपी पँछी उन यादों को ताजा करने के लिए, अपने पंख फड़फड़ाता हुआ बार - बार उड़कर अपने परम पिता परमात्मा की उस अवतरण भूमि मधुबन में जा रहा है। *मधुबन के आंगन में परमात्म पालना के असीम सुख की अनुभूति में खोई मैं स्वयं को बाबा की कुटिया में देख रही हूँ*। बाबा के ट्रांसलाइट के चित्र के सामने बैठते ही मुझे ऐसा अनुभव होता है जैसे मेरे सामने अव्यक्त ब्रह्मा बाबा बैठे हैं और उनकी भृकुटि में मेरे सच्चे साहिब शिवबाबा विराजमान हैं। *उन्हें देख कर मन से बार - बार आवाज आ रही है "सच्चे दिल पर साहिब राजी"*

➳ _ ➳ इस शब्द को स्मृति में रख अपने सच्चे साहिब शिव बाबा के साथ अंदर बाहर साफ रहने की प्रतिज्ञा करते हुए मैं जैसे ही अपने सच्चे साहिब की ओर देखती हूँ उस ट्रांसलाइट के चित्र के स्थान पर अव्यक्त बापदादा को अपनी दोनों बाहों को पसारे अपने सामने पाती हूँ। *अपनी स्नेह भरी दृष्टि से बाबा मुझे निहार रहें हैं और मेरी इस प्रतिज्ञा को सुन मन्द - मन्द मुस्कराते हुए जैसे मुझ पर बलिहार जा रहें हैं*। जिस भगवान पर दुनिया बलिहार जाती है वो भगवान अपने बच्चों पर कैसे बलिहार जाता है, यह देख कर मन खुशी से गदगद हो रहा है। अपनी खुशी को अपने भीतर समाये अब मैं बाप दादा की और बढ़ रही हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा की शक्तिशाली दृष्टि से आ रही लाइट माइट मुझे भी

लाइट माइट स्थिति में स्थित कर रही है। अपने लाइट माइट स्वरूप में बाबा के सामने पहुंच कर मैं बाबा की बाहों में समा जाती हूँ। बाबा की बाहों के झूले में झूलते हुए मैं अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति की अनुभूति कर रही हूँ। *जैसे एक छोटा बच्चा माँ की गोद मे आकर स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है और पलक झपकते ही सो जाता है ऐसे ही बापदादा की ममतामयी गोद मे बैठ, बाबा के प्रेम की शीतल छांव में मैं गहन सुख का अनुभव कर रही हूँ*। मेरे माथे पर रुई के समान बाबा के स्नेहमयी हाथों का हल्का - हल्का स्पर्श मुझे आनन्दित कर रहा है।

➳ _ ➳ परमात्म गोद का सुख पा कर मैं स्वयं को दुनिया की सबसे सौभाग्यशाली आत्म अनुभव कर रही हूँ। अब मैं बापदादा के सामने बैठ, परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हूँ। बाबा का वरदानी हाथ मेरे सिर के ऊपर है। वरदानों से बाबा मेरी झोली भर रहें हैं। *परमात्म बल से मुझे भरपूर कर रहें हैं ताकि कोई भी परिस्थिति मुझे सच के रास्ते से हटाकर झूठ की ओर ना ले जाये*। सच्चे साहिब के साथ अंदर बाहर सदा सच्चे रहने की प्रतिज्ञा पर मैं सदा अटल रहूँ इसके लिए बाबा अपनी शक्तियों से मुझे शक्तिशाली बना रहे हैं और मेरे मस्तक पर विजय का तिलक लगा रहें हैं।

➳ _ ➳ परमात्म बल से मुझे भरपूर करके अब बाबा मुझे मधुबन घर की सैर करवा रहें हैं। *अपने लाइट के फ़रिशता स्वरूप में मैं बापदादा के साथ आबू की पहाड़ियों पर घूम रही हूँ। प्रकति के सुंदर नज़ारो का आनन्द ले रही हूँ। बाबा के साथ पिकनिक मना रही हूँ*। अव्यक्त पालना में भी बाबा मुझे साकार पालना का अनुभव करवा रहें हैं। अपने सच्चे साहिब के साथ अपने मधुबन घर की सैर करके अब मैं वापिस अपने ब्राह्मण स्वरूप में अपने कार्य स्थल पर लौट आती हूँ।

➳ _ ➳ *अपने सच्चे साहिब के सच्चे प्यार को अपने दिल मे बसाये, उनके साथ अंदर, बाहर सदा सच्चे रहने की प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बात उन्हें बता कर अब मैं अपने साहिब के दिल रूपी

तख्त पर सदा विराजमान रहती हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं फ्राकदिल बन दुःखी अशान्त आत्माओं को खुशी का दान देने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर रहमदिल आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव ज्ञान योग की पालना में पलती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा रूहानी पालना में पलती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा शक्तिशाली बनती और बनाती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *बापदादा ने देखा कि सेवा वा कर्म और स्व-पुरूषार्थ अर्थात् योगयुक्त तो दोनों का बैलेन्स रखने के लिए विशेष एक ही शब्द याद रखो - वह कौनसा? बाप 'करावनहार' है और मैं आत्मा, (मैं फलानी नहीं) आत्मा 'करनहार' हूँ।* तो करन-'करावनहार', यह एक शब्द आपका बैलेन्स बहुत सहज बनायेगा। स्व-पुरूषार्थ का बैलेन्स या गति कभी भी कम होती है, उसका कारण क्या? 'करनहार' के बजाए मैं ही करने वाली या वाला हूँ, 'करनहार' के बजाए अपने को 'करावनहार' समझ लेते हो। मैं कर रहा हूँ, जो भी जिस प्रकार की भी माया आती है, उसका गेट कौन सा है? *माया का सबसे अच्छा सहज गेट जानते तो हो ही - 'मैं'।* तो यह गेट अभी पूरा बन्द नहीं किया है। ऐसा बन्द करते हो जो माया सहज ही खोल लेती है और आ जाती है। अगर 'करनहार' हूँ तो कराने वाला अवश्य याद आयेगा। कर रही हूँ, कर रहा हूँ, लेकिन कराने वाला बाप है *बिना 'करावनहार' के 'करनहार' बन नहीं सकते हैं।* डबल रूप से 'करावनहार' की स्मृति चाहिए। *एक तो बाप 'करावनहार' है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ।* इससे क्या होगा कि *कर्म करते भी कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं - कर्मातीत अवस्था।*

➳ _ ➳ *सेवा के अति में नहीं जाओ। बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ।* तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। कई बच्चे कहते हैं - *बहुत सेवा की है ना तो थक गये हैं, माथा भारी हो गया है। तो माथा भारी नहीं होगा। और ही 'करावनहार' बाप बहुत अच्छा मसाज करेगा।* और माथा और ही फ्रेश हो जायेगा। थकावट नहीं होगी, एनर्जी एकस्ट्रा आयेगी। जब साइन्स की दवाइयों से शरीर में एनर्जी आ सकथी है, तो क्या बाप की याद से आत्मा में एनर्जी नहीं आ सकती? और आत्मा में एनर्जी आई तो शरीर में प्रभाव आटोमेटिकली पड़ता है। अनुभवी भी हो, कभी-कभी तो अनुभव होता है। फिर चलते-चलते लाइन बदली हो जाती है और पता नहीं पड़ता है। जब कोई उदासी, थकावट या माथा

भारी होता है ना फिर होश आता है, क्या हुआ? क्यों हुआ? लेकिन *सिर्फ एक शब्द 'करनहार' और 'करावनहार' याद करो।*

✺ *ड्रिल :- "'करावनहार' की स्मृति से सेवा या कर्म करते सहज योगयुक्त रहने का अनुभव"*

➳ _ ➳ मस्तक मणि मैं आत्मा... इस शरीर में विराजमान हूँ... एक दिव्य ज्योति पुंज समान मैं आत्मा... बैठी हूँ एक परमपिता परमात्मा की याद में... *मन बुद्धि रूपी मन के द्वार को एक शिवबाबा की ओर ही खोलती मैं आत्मा...* आह्वान करती हूँ... मेरे पिता परमेश्वर का... प्यार भरा आह्वान सुनकर मेरे पिता परमेश्वर अपने ब्रह्मा रथ में विराजमान होकर पहुँच जाते हैं मेरे मन के पास... *मन के द्वार पर खड़ी मैं आत्मा... बापदादा का फूलों से स्वागत करती हूँ...* उनका हाथ पकड़कर मैं आत्मा उनको रत्नजड़ित सिंहासन पर बिठाती हूँ... *बापदादा को प्यार से भोग की थाली अर्पण कर मैं आत्मा भावपूर्ण हो जाती हूँ...*

➳ _ ➳ *अपने हाथों से बापदादा मुझे भी भोग ख़िला रहे हैं...* और मैं आत्मा गदगद हो जाती हूँ... बापदादा से आती हुई वर्षा रूपी किरणों को अपने में धारण करती जा रही हूँ... जन्मों के विकारों को पिता को समर्पित कर मैं आत्मा हलकी फूल बनती जा रही हूँ... *संगमयुगी ब्राह्मण के कड़े विकार "मैं" और "मेरेपन" को संपूर्ण रूप से बापदादा को दान में दे रही हूँ....* और मंद मंद बापदादा मुस्कुरा रहे हैं... "मैं" और "मेरेपन" के सूक्ष्म संकल्पों को भी पूर्णतः त्याग करती मैं आत्मा... बापदादा की दिलतख्तनशीन बन जाती हूँ... *"करावनहार" सिर्फ एक बाप है और मैं आत्मा "करनहार" हूँ... इस स्मृति में झूमती मैं आत्मा...*

➳ _ ➳ अपने कलियुगी संस्कारों को एक बाप पर बलि चढ़ाती जा रही हूँ... और मैं आत्मा "करनहार" की स्मृति में अपना अलौकिक पार्ट बजा रही हूँ... *हर घड़ी हर पल "करावनहार" सिर्फ एक बाप की ही स्मृति से छलकती मैं

आत्मा... सेवा या कर्म करते सहज योगयुक्त रहने का अनुभव कर रही हूँ...* अब तो हर पल... बापदादा को साथ साथ महसूस कर रही हूँ... मेरे को तेरे में बदलती... मेरेपन को तेरेपन में समर्पित करती मैं आत्मा... *बापदादा से... सेवा में... योग में... सफलतामूर्त का वरदानी तिलक लगवा रही हूँ...* बापदादा के हाथों से डबल ताज धारण करती हूँ... फूलों की माला से बापदादा द्वारा साज श्रृंगार होता देख रही हूँ...

➳ _ ➳ *कर्मातीत अवस्था की अधिकारी मैं आत्मा... कर्म के अच्छे या बुरे प्रभाव में नहीं उलझती हूँ...* जो पिता ने बोला वह किया... पिता ने जो करवाया वह मैं आत्मा अपने कर्मेन्द्रियों द्वारा करवा रही हूँ... हर कार्य को बापदादा को समर्पित करती मैं आत्मा.. *"मेरेपन" के रावण रूपी विकार को अग्निदाह दे... अशोक वाटिका रूपी देहाभिमानी स्थिति से मुझ सीता रूपी आत्मा से... एक रामरूपी शिवबाबा को प्रत्यक्ष करती रहती हूँ...* माया रूपी गेट को "करावनहार" रूपी चाबी से संपूर्ण लॉक करती मैं आत्मा... योग और सेवा को मेरेपन के विकारों से सुरक्षित रखती हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔